① 2/9/20

B.A. 1 B.Ed.
Hindi रचना
Part I

डॉ० आनन्द कुमार
एसोसिएट प्रोफेसर
हिंदी विभाग
एस०एस० एस०एस० कॉलेज

कबीर के पद की व्याख्या - जहानाबाद

प्रश्न:- कबीरदास के निम्नलिखित पद की व्याख्या प्रस्तुत करें —

कौन ठगवा नगरिया लूटल हो,
चन्दन काठ के बनल खटोलना,
तापर दुलहिन सूतल हो।
उठो री सखि मोरी मांग संवारो,
दुलहा मोसे रूठल हो।
आये जमराज पलंग चढ़ि बैठे,
नैनन अंसुआ टूटल हो।।
चारि जने मिलि खाट उठाइन,
चहुँदिसि धू धू उठल हो।
कहत कबीर सुनो भाई साधो,
जग से नाता छूटल हो।।

उत्तर - प्रस्तुत पंक्तियों के रचयिता भक्तिकाल के निर्गुणधारा के ज्ञानमार्गी शाखा के प्रतिनिधि कवि कबीरदास हैं। कवि ने यहाँ पर मृत्यु की अनिवार्यता और संसार की नश्वरता को तत्कालीन समाज के साधारण प्रतीकों के माध्यम से उपस्थित किया है। इनके प्रस्तुत पद निर्गुण परक और रहस्यवादी हैं।

प्रस्तुत पद में कबीर ने अरथी पर पड़े मनुष्य के मृत शरीर की करुणा स्थिति का

क्रमशः —

तिथि 19-8-20 (7) 19.8.20
कक्षा 5 हिन्दी रचना कबीर

कबीरदास —

मिलना आत्मिक के रूप में चित्रण है। यमराज यहाँ नगर (मृत्युलोक) वाला दूल्हा का प्रतीक है जो मृत्यु का देवता कहा है। यह शरीर रूपी एक नगर है। यहाँ आकर सामान्य लोगों का प्राण हर लेता है। पार्थिव शरीर को यहाँ दुल्हन कहा गया है। शरीर में रहने वाले प्राण को यहाँ दूल्हा कहा गया है। यही प्राण शरीर से रूठ कर निकल जाता है तो व्यक्ति की मृत्यु होती है।

मृत्यु के बाद मृत देह को श्मशान ले जाने के लिये लकड़ी या बाँस का अर्थी या ताबूत बनाया जाता है। उसे धूप, चन्दन तथा अगरबत्ती से सुगंधित किया जाता है तथा उस अर्थी पर मृत शरीर को लिटाया जाता है। इसी रूप में संसार में मृत शरीर को अंतिम संस्कार के लिये व्यक्ति श्मशान में ले जाता है। मृत शरीर दुल्हन की भाँति दुल्हन उस अर्थी पर शोभा देता है। उसे नवीन वस्त्र पहनाया जाता है। चन्दन और पुष्प चढ़ाये जाते हैं। अर्थात् उसका श्रृंगार कर तथा उसे सजा कर श्मशान में ले जाया जाता है।

दुल्हन अपनी सहेलियों से यहाँ मंगल गाने का आग्रह करती है जिसमें श्रृंगार से प्रभावित होकर मृत शरीर में उसका प्राण रूपी दूल्हा वापस आ जाए।

मृत्यु का देवता यमराज दुल्हन के पलंग पर आकर बैठ गया है। शरीर से प्राण निकलने पर आँखों से आँसु धारा प्रवाहित होने लगती है।